ज्ञान शांति मैत्री

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya

(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

जनसंपर्क विभाग- Ph./Fax: 07152-252551 मो.9960562305 ईमेल-bsmirgae@gmail.com

प्रेस-विज्ञप्ति

रवींद्रनाथ टैगोर मानवतावाद के प्रखरतम पुरोधा-कुलपति राय

टैगोर की 150वीं जयंती पर हुआ गहन विमर्श, हिंदी विश्वविद्यालय द्वारा रवीन्द्रनाथ ठाकुर :परम्परा और आधुनिकता विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का कोलकाता में उद्घाटन

वर्धा दि. 10 मई 2011 –महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा तथा केंद्रीय काँच एवं सिरामिक अनुसंधान संस्थान (सी.जी.सी.आर.आई.) कोलकाता के संयुक्त तत्वावधान में कोलकाता में रवींद्रनाथ टैगोर की 150 वीं जयंती पर **रवीन्द्रनाथ ठाकुर : परम्परा और आधुनिकता** विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन मंगलवार को विश्वविद्यालय के कुलपति विभूति नारायण राय ने किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर ऐसे विरल मनीषी हैं जिनकी रचनाओं में मानवतावाद अपने प्रखरतम स्वर में उपलब्ध है। कुलपति जी समारोह के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता कर रहे थे।

हाल में प्रकाशित एक पोलिश लेखिका के संस्मरण की हिंदी में अनूदित पुस्तक को उद्धरित करते हुए कुलपति ने कहा कि जब पूरा देश साम्राज्यवाद से मुक्ति के लिए लड़ रहा था, लंगोटी पहने हुए एक व्यक्ति (गांधी) ने पूरे देश को भयमुक्त कर दिया था और साम्राज्यवाद के विरुद्ध लोग सड़कों पर उतर आए थे, तब गुरुदेव ने अपने

शांतिनिकेतन आश्रम में शिक्षकों-विद्यार्थियों को उस आंदोलन में जाने से रोका था। गुरुदेव में पाये गये इस द्वैत की तह में जाएँ तो पायेंगे कि वे सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के खतरे से वाकिफ थे। हम देखते हैं कि वही पूर्व आधुनिक राष्ट्रवाद परवर्ती काल में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के रूप में बदलता नज़र आया। श्री राय ने कहा कि रवीन्द्रनाथ उस पूर्व आधुनिक राष्ट्रवाद के विरोधी थे जो अपने को मनुष्य से ऊपर मानता था। गुरुदेव मानवतावाद को सबसे ऊपर मानते थे; तभी उनकी रचनाओं में मानवतावाद अपने प्रखरतम स्वर में अभिव्यक्त हुआ है।

उद्घाटन सत्र में बीज-वक्तव्य देते हुए प्रख्यात लेखिका जया मित्र ने कहा कि आज हमारे सामने जितने सारे संकट हैं, उसकी बड़ी वजह यह है कि मनुष्य ने प्रकृति के साथ तादात्म्य बिठाकर चलने के बजाय प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन शुरू किया है। उन्होंने कहा कि रवीन्द्रनाथ आज भी हमें प्रकृति के सानिध्य व साहचर्य में आगे बढ़ने की सीख देते हैं। उद्घाटन सत्र का संचालन प्रियंकर पालीवाल ने किया जबकि स्वागत-भाषण सी.जी.सी.आर.आई. के कार्यकारी निदेशक डॉ. डी.के. भट्टाचार्य ने बांग्ला और अंग्रेजी- मिश्रित भाषा में किया। संस्थान में राजभाषा विभाग की सुमना मजूमदार ने सबका धन्यवाद ज्ञापन किया। उद्घाटन-सत्र में प्रियंकर पालीवाल के संपादन में प्रकाशित 'अक्षर' त्रैमासिक के प्रवेशांक का लोकार्पण विभूति नारायण राय और जया मित्र ने किया। इस अवसर पर इस पत्रिका के सलाहकार व वरिष्ठ कवि मानिक बच्छावत भी मौजूद थे।

उद्घाटन सत्र के बाद दूसरे व तीसरे सत्रों में प्रो. स्वपन मजुमदार, प्रो. अमरनाथ शर्मा, प्रो. प्रफुल्ल कोलख्यान, प्रो. शंभुनाथ, प्रो. अरूण होता, गीतेश शर्मा, डॉ. कृपाशंकर चौबे और अनिर्वाण घोष ने रवीन्द्रनाथ की रचनाओं के विभिन्न पक्षों पर प्रकाश डाला। दूसरे सत्र की अध्यक्षता करते हुए वरिष्ठ साहित्यकार-डॉ. गंगा प्रसाद विमल ने कहा

कि रवीन्द्रनाथ सदियों के इतिहास में एक ही कवि हैं जिनकी रचनाओं में बहुत सारे प्रश्न के उत्तर दिखाई पड़ते हैं। तीसरे सत्र की अध्यक्षता करते हुए प्रो. रणजीत साहा ने कहा कि विश्व मानवतावाद और मनुष्य की चेतना का निरन्तर विस्तार गुरुदेव की रचनाओं ने किया। समारोह में हिंदी विश्वविद्यालय के विशेष कर्तव्याधिकारी नरेंद्र सिंह, आंतरिक संपरीक्षा अधिकारी व हिंदीसमय**डॉटकॉम** के प्रभारी सिद्धार्थ शंकर त्रिपाठी, प्रतिष्ठित ब्लॉगर शिवकुमार मिश्र और राजेश अरोड़ा भी उपस्थित थे।

विश्वविद्यालय का कोलकाता केंद्र अभी शुरू होने की प्रक्रिया में है; कार्यालय हेतु भवन खोजा जा रहा है, सद्य:नियुक्त केंद्र प्रभारी ने अभी- अभी कार्यभार ग्रहण किया है; लेकिन विश्वविद्यालय में लगातार चलने वाली विचार-विमर्श की गतिविधियों के आयोजन की शृंखला ने कोलकाता में अपने कदम मजबूती से रख दिये है। इसके द्वारा आयोजित पहला कार्यक्रम भव्य तरीके से प्रारंभ हुआ।

बी एस मिरगे

(जनसंपर्क अधिकारी)